पुरुष पाठकों के लिए विशेष

कुछ बुनियादी सवाल

कमला भसीन

पिछले अंक (अप्रैल-मई, 1992) में हमने पुरुष पाठकों के नाम एक पत्र छापा था। उसमें हमने एक बुनियादी मुद्दा उठाया था कि समाज में औरत का दर्ज़ा तभी बराबर होगा जब पुरुष अपना सहयोग देंगे। समाज में बदलाव लाने के लिए पुरुषों को स्त्रियों के शोषण के प्रति अपना नज़रिया बदलना होगा।

इसी मुद्दे को आगे बढ़ाते हुए हम नारीवाद से संबंधित कुछ अफवाहों के बारे में इस बार लिख रहे हैं। नारीवाद और महिला आंदोलन के बारे में कई बार यह पूछा जाता है कि पुरुषों के बारे में इनके क्या विचार हैं। क्या नारीवादी पुरुषों के खिलाफ हैं और उनसे नफ़रत करती हैं?

हमारा जवाब है, नहीं।

गलत ढांचा

नारीवाद पुरुषों से नफ़रत नहीं करतीं। कम से कम दक्षिण एशिया में तो ऐसी किसी नारीवादी को नहीं जानते जो पूरी पुरुष जाति से नफ़रत करने की बात करती है। जैसा हमने पहले कहा, समस्या व्यक्तिगत पुरुषों या स्त्रियों की नहीं है। चूंकि यह समस्या पूरे ढांचे व विचारधारा की है इसलिए हमारी नाराज़गी पूरे ढांचे से है। हम पितृसत्ता का व इसको मज़बूत बनाने वाली सब ताक़तों व व्यक्तियों का विरोध करते हैं। अगर पौरुष या मर्दानगी का मतलब है रौब और धौंस जमाना, हिंसात्मक व आक्रामक व्यवहार करना, मारना-पीटना, औरतों को अपनी संपत्ति समझना, अपने से कमतर समझना तो हम बेशक ऐसे पौरुष या मर्दानगी के खिलाफ़ हैं। हम उन मर्दों (व स्त्रियों) के भी खिलाफ़ हैं जो पुरुष सत्ता को बनाए रखना चाहते हैं। लेकिन हर मर्द से हमारी लड़ाई हो ऐसा नहीं है।

यहां पर हम यह भी कहना चाहती हैं कि हम उन स्त्रियों के भी खिलाफ़ हैं जो सत्ता में पहुंच कर "मर्दाना" हरकतें करती हैं, जो औरों को नीचा दिखाने की कोशिश में रहती हैं, जो पुरुषों जैसा ही आक्रामक व्यवहार करती हैं। दूसरी तरफ़, वे पुरुष जो पितृसत्ता को गलत समझते हैं, जो स्त्री और पुरुष में बराबरी चाहते हैं व इसके लिए प्रयत्न भी करते हैं, नारीवादी संघर्ष में हमारे साथी हैं। सो बात सिर्फ़ स्त्री या पुरुष होने की नहीं है। बात है विचारों की, नज़रिये की, मान्यताओं व मूल्यों की।

हमारा विश्वास है कि ठीक उसी तरह जैसे स्त्रियां जन्म से ही अधिक स्नेहमयी व त्यागमयी नहीं होतीं वैसे ही पुरुष भी स्वाभाविक रूप से आक्रामक व दमनकारी नहीं होते। वास्तव में वे भी सामाजिक संस्कारों और रूढ़ियों के उतने ही शिकार हैं जितनी कि स्त्रियां। वे भी समाज द्वारा निर्धारित छवियों, भूमिकाओं के फंदे में फंसे हैं। जैसे औरत कोई हिम्मत का काम नहीं कर सकती वैसे ही मर्दों को रोने की या ममता दिखाने की

इजाज़त नहीं है। हमारी समस्या यह है कि अधिकांश पुरुष इस बंधन को पहचानते नहीं तथा कुछ ही बंधन मुक्त होकर अधिक मानवीय, सच्चे लोकतांत्रिक बनना चाहते हैं। यही नहीं, स्त्रियों द्वारा उन्हें इस बात की पहचान कराने की कोशिश भी उन्हें पसंद नहीं आती।

बदलाव नहीं चाहते

एक अन्य सवाल जो अक्सर हमसे पूछा जाता है कि अगर पुरुष भी सामाजिक रूढ़ियों में बंधे हैं और स्त्रियों की मुक्ति से इतने नज़दीक से जुड़े हैं तो वे नारीवाद से घबराते क्यों हैं।

पुरुष नारीवाद से घबराते हैं क्योंकि वे बदलाव नहीं चाहते। मौजूदा हालात उन्हें ज़्यादा फायदेमंद नज़र आते हैं। नारीवाद समाज में काम की जगह और घर में पुरुष की श्रेष्ठता को चुनौती देता है। नारीवाद पुरुष के अधिकार को योग्यता के बजाए केवल लिंग पर आधारित होने के कारण नहीं मानता। नारीवाद पुरुषों को उनके नज़रिए और व्यवहार की परख करने के लिए विवश करता है। यही कुछ कारण हैं कि पुरुषों के लिए नारीवाद का स्वागत करना आसान नहीं। कोई भी शासक खुशी-खुशी अपनी गद्दी और अधिकार नहीं छोड़ता।

पुरुष नारीवाद से घबराते हैं क्योंकि वे परिवर्तन नहीं चाहते, चाहे उसमें उनका भी भला हो। परिस्थितियां अधिक स्पष्ट रूप से उन्हें फ़ायदेमंद नज़र आती है। चूंकि नारीवाद समाज में, कार्य के स्थान और घर में पुरुष श्रेष्ठता को चुनौती देता है, चूंकि वह उस पुरुष आधिपत्य को नहीं मानता जो योग्यता नहीं लिंग पर आधारित है, चूंकि वह पुरुषों को उनके दृष्टिकोण व व्यवहार की परख करने के लिए विवश करता है। अतः उनके लिए नारीवाद का स्वागत करना न तो आसान है और न ही आनन्ददायक। कोई भी शासक प्रसन्नतापूर्वक अपनी गद्दी व अपना आधिपत्य नहीं छोड़ता।

वर्तमान पितृसत्ता व्यवस्था ने पुरुषों को जन्म से ही ऊंचा दर्ज़ा, प्यार सम्मान व अन्य कई सुविधाएं दे रखी हैं। ये सभी चीजें लड़कों का जन्मसिद्ध अधिकार हैं, लड़कियों का नहीं। इसके अलावा लड़के के लिए बेहतर भोजन, बेहतर चिकित्सा सुविधा, बेहतर शिक्षा मुहैया कराई जाती है।

बेबुनियाद डर

इसके अतिरिक्त पुरुषों के मन में स्वतंत्र व योग्य स्त्रियों के संबंध में भी डर है। वे डरते हैं कि स्त्रियां नौकरियों के लिए उनके साथ मुकाबला करेंगी। यदि स्त्री को मुख्य रूप से केवल गृहिणी समझें तो उसे जब आवश्यकता हो नौकरी में रखा जा सकता है और आवश्यकता न होने पर निकाला जा सकता है। यदि उनकी भूमिका की परिभाषा बदल जाती है और उनकी अपने आपको आगे बढ़ाने की योग्यता व क्षमता बढ़ जाती है तो फिर इस प्रकार का व्यवहार करना संभव न होगा। लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार नौकरियां मिलेंगी। इसलिए नहीं कि वे स्त्री हैं या पुरुष। स्पष्ट है यह बात पुरुषों को कुछ अधिक पसंद नहीं आती।

पूंजीवाद भी स्त्रियों के विरुद्ध है। यदि स्त्रियों की चेतना में बदलाव आता है तो वे कम मज़दूरी वाली, कम हुनर की नौकरियां नहीं करेंगी जो अब उनके ही पल्ले पड़ती हैं। पूंजीवादी ताक़तें जो युद्ध, सैक्स, ग़ैर-जरूरी उपयोग पर पनपती हैं नारीवाद को पनपने नहीं देना चाहतीं। वे हर तरीक़े

से नारीवाद का विरोध करती आई हैं और करती रहेंगी। ये ताक़तें ही नारीवाद के बारे में गलत धारणाएं फैलाती हैं।

नया समाज

हमारा यह कहना है कि आने वाले लंबे समय के दौरान नारीवाद स्त्री और पुरुष दोनों के लिए फायदेमंद साबित होगा। नारीवाद हर तरह की गैरबराबरी, दबाव व दमन के खिलाफ है। वह एक बराबरी की व्यवस्था कायम करने के पक्ष में है। यह सही है कि इस व्यवस्था में पुरुषों के गैरवाज़िब अधिकार नहीं होंगे लेकिन अन्य तरीकों से उन्हें भी लाभ होगा। मिसाल के तौर पर यदि परिवार में हर बच्चे को (केवल बेटे को ही नहीं) समान रूप से बढ़ने, विकसित होने के अवसर मिलेंगे तो परिवार में, देश में योग्यता व प्रतिभा का विकास होगा। यदि औरतों को सदा ही दूसरों पर निर्भर, लाचार और असहाय बने रहने को विवश नहीं किया जाए तो परिवार अधिक मज़बूत व आर्थिक रूप से सक्षम होंगे क्योंकि काम करने, कमाने वाले हाथ बढ़ जाएंगे। पुरुषों पर से भी आर्थिक ज़िम्मेदारियों का दबाव कुछ कम होगा।

अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वे भी नये समाज में अपनी व्यक्तिगत रुचि और इच्छाओं के अनुसार जी पाएंगे। समाज में सदा मज़बूत बने रहने, मर्दानगी दिखाने और परिवार का पेट पालने जैसे दबाव हट जाएंगे और अवश्य ही बहुत से पुरुष भी चैन की सांस लेंगे।

हमारा विश्वास है कि नारीवाद हमें एक स्पष्ट दिशा दे सकता है। नारीवाद खोज की इस सुरंग के अंत में हमें रोशनी नज़र आती है।

□